कठोपनिषद् प्रथम अध्याय प्रथम वल्ली

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय

ॐ उशन् ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ।
तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ॥

वाजश्रवस ने (यज्ञफल की) कामना करते हुए अपना सर्वस्व दान कर दिया। और वाजश्रवस का नचिकेता नाम का एक पुत्र था ।

तं ह कुमारं सन्तं दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धाऽऽविवेश। सोऽमन्यत ॥

जब दक्षिणाएँ ले जायी जा रही थीं, तब नचिकेता के भीतर, जो अभी कुमार ही था, श्रद्धा का आवेश हो गया और उसने सोचा।

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः।
अनन्दा नाम ते लोकास्तान्स गच्छति ता ददत् ॥

जो गायें जल पी चुकी हैं, घास खा चुकी हैं, जिनका दूध दूहा जा चुका है, जो इन्द्रियहीन हो रही हैं, ऐसी गायों का दान देने वाला आनन्दविहीन लोकों में जाता है।

स होवाच पितरं तत कस्मै मां दास्यसीति।
द्वितीयं तृतीयं तं होवाच मृत्यवे त्वा ददामीति ॥

उसने अपने पिता से कहा, हे पिता! आप मुझे किसको देंगे? दूसरी बार और पुनः तीसरी बार उसने वही कहा, और पिता ने प्रत्युत्तर में कहा, “मैं तुम्हें ‘मृत्यु’ को देता हूं”।

बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः।

किं स्विद्यमस्य कर्तव्यं यन्मयाद्य करिष्यति ॥

बहुतों में मैं अग्रगामी हूँ, बहुतों में मैं मध्यगामी रहता हूँ। ऐसा क्या हो सकता है जो यम करना चाहते हैं जिसे वे आज मेरे द्वारा सम्पन्न करेंगे।

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथाऽपरे।

सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः॥

पहले मनुष्य जैसे थे पीछे मुड़कर देखिये; अपने चारों ओर देखिये उनके पश्चात् भी अन्यान्य मनुष्य आये हैं। मर्त्य मनुष्य खेत में उत्पन्न अन्न के दानों के समान पककर झड़ जाता है तथा खेत में अन्न के दानों के समान पुनः उत्पन्न हो जाता है।

वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहान्।

तस्यैतां शान्तिं कुर्वन्ति हर वैवस्वतोदकम् ॥

अतिथि के रूप में लोगों के घरों मे प्रवेश करने वाला ब्राह्मण साक्षात् वैश्वानर अग्नि-स्वरूप है। इस भाव से ही लोग उसे शान्त एवं प्रसन्न किया करते हैं। हे विवस्वान्-पुत्र, आप आतिथेय जल ले आइये।

आशाप्रतीक्षे संगतं सूनृतां चेष्टापूर्वे पुत्रपशूंश्च सर्वान्।

एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्नन्वसति ब्राह्मणो गृहे ॥

जिसके घर मे ब्राह्मण बिना खाए रहता है, उस अल्पबुद्धि मनुष्य की सारी आशा-प्रतीक्षाएँ, जो कुछ उसने पाया है, जो सत्य और शुभ उसने बोला है, जो कुएँ खुदवाए हैं तथा जो यज्ञ किये हैं, और उसके सब पुत्र एवं पशु उस अनादृत ब्राह्मण के द्वारा विनष्ट कर दिये जाते हैं ।

तिस्रो रात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मेऽनश्नन्ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः।

नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन्स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात्प्रति त्रीन्वरान्वृणीष्व ॥

हे ब्राह्मण! तुम नमनयोग्य समादरणीय अतिथि हो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं, ब्राह्मणवर्य ! मेरा कल्याण हो, तुमने मेरे घर में तीन रात बिना कृछ खाए वास किया, इसलिए तुम तीन वरों का, प्रतिरात्रि के लिए एक वर का, चयन करो ।

शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्याद्वीतमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो।

त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत्प्रतीत एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे ॥

(नचिकेता कहता है) हे यमराज! मेरे पिता गौतम शान्तचित्त तथा प्रसन्नमना हो जायें और उनका मेरे प्रति जो क्षोभ है, वह न रहे; आपके द्वारा छोडे जाने पर वे आश्वस्त हृदय से मेरा अभिवादन करे-तीन वरों में से मैं यह प्रथम वर चुनता हूँ।

यथा पुरस्ताद् भविता प्रतीत औद्दालकिरारुणिर्मत्प्रसृष्टः।

सुखं रात्रीः शयिता वीतमन्युस्त्वां ददृशिवान्मृत्युमुखात्प्रमुक्तम् ॥

(यम कहते हैं) तुम्हारे पिता, औद्दालकि आरुणि, पूर्ववत् आश्वस्त-हृदय होंगे तथा मेरे द्वारा विमुक्त होंगे। तुम्हें मृत्यु के मुख से मुक्त हुआ देखकर उनका क्षोभ शान्त हो जायेगा और वे रातों को सुखपूर्वक सोयेंगे।

स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति न तत्र त्वं न जरया बिभेति।

उभे तीर्त्वाऽशनायापिपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥

(नचिकेता कहता है) स्वर्गलोक मे किञ्चित्-मात्र भय नहीं है, हे मृत्युदेव! आप भी वहाँ नहीं हैं और न जरावस्था है न उसका भय है; भूख और प्यास दोनों को नदियों के समान पार कर, शोक का अतिक्रमण करके आत्मा स्वर्गलोक में आनन्दित रहती है।

स त्वमग्निं स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि त्वं श्रद्दधानाय मह्यम्।

स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण ॥

हे मृत्युदेव आप जिस स्वर्गिक अग्नि का अध्ययन करते हैं उसका मुझ श्रद्धावान् के प्रति प्रवचन करिये। जो स्वर्गलोक को प्राप्त करते हैं वे अमृतत्व के भागी होते हैं। यह मैं द्वितीय वर में वरण करता हूँ।

प्र ते ब्रवीमि तदु मे निबोध स्वर्ग्यमग्निं नचिकेतः प्रजानन्।

अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां विद्धि त्वमेतं निहितं गुहायाम् ॥

(यम कहते हैं) हे नचिकेता! उस स्वर्गिक अग्नि का मैं तुम्हारे प्रति कथन करता हूँ, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ। तुम उसे सुनो और समझो। इसे तुम अनन्त लोकों की प्राप्ति एवं प्रतिष्ठा तथा हमारी सत्ता की गुहा में निहित तत्त्व के रूप में जानो।

लोकादिमग्निं तमुवाच तस्मै या इष्टका यावतीर्वा यथा वा।

स चापि तत्प्रत्यवदद्यथोक्तमथास्य मृत्युः पुनरेवाह तुष्टः॥

उन्होंने (यम ने) उसे लोकों की आदिकारणस्वरूपा अग्नि के विषय में तथा उसके लिए इटँ क्या हैं, कितनी हैं एवं किस प्रकार व्यवस्थित की जाती हैं, सब बताया। नचिकेता ने भी जैसा-जैसा उसे बताया गया वैसा-वैसा प्रतिकथन कर दिया। मृत्युदेव यम सन्तुष्ट हो गए और उन्होंने उससे आगे कहा।

तमब्रवीत्प्रीयमाणो महात्मा वरं तवेहाद्य ददामि भूयः।

तवैव नाम्ना भविताऽयमग्निः सृङ्कां चेमामनेकरूपां गृहाण ॥

प्रसन्न महात्मा यम ने उससे कहा, “मैं आज फिर से तुम्हें एक वर और देता हूँ। यह ‘अग्नि’ भविष्य में तुम्हारे ही नाम से पुकारी जायेगी। और इस अनेकरूपा माला को भी तुम ग्रहण करो”।

त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य सन्धिं त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू।

ब्रह्मजज्ञं देवमीड्यं विदित्वा निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति ॥

जो तीन नचिकेता-अग्नियों को प्रदीप्त करता है तीनों के साथ संयुक्त हो जाता है, त्रिविध कर्म करता है, वह जन्म और मृत्यु को पार कर जाता है; क्योंकि वह उस आराध्य 'देव' को जान जाता है जो 'ब्रह्म' से उत्पन्न है, 'ज्ञाता' है तथा उसका दर्शन पाकर वह परा-शान्ति को प्राप्त करता है।

त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा य एवं विद्वांश्चिनुते नाचिकेतम्।

स मृत्युपाशान्पुरतः प्रणोद्य शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥

जब मनुष्य तीन नचिकेता-अग्नियों को प्राप्त करके यह जान जाता है कि ये 'त्रयात्मक' हैं, तथा ऐसा जानते हुए जब 'नचिकेता-अग्नि' का दर्शन करता है, तब वह अपने सामने सें मृत्यु-पाश के जालों का उच्छेदन कर डालता है, वह शोक का अतिक्रमण करके स्वर्गलोक में हर्षित होता है।

एष तेऽग्निर्नचिकेतः स्वर्ग्यो यमवृणीथा द्वितीयेन वरेण।

एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यन्ति जनासस्तृतीयं वरं नचिकेतो वृणीष्व ॥

हे नचिकेता! यह है स्वर्गिक 'अग्नि' जिसका तुमने द्वितीय वर के रूप में वरण किया है। इस 'अग्नि' के सम्बन्ध में सभी लोग कहेंगे, यह तुम्हारी ही अग्नि है। हे नचिकेता! अब तृतीय वर का वरण करो।

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।

एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाऽहं वराणामेष वरस्तृतीयः ॥

(नचिकेता कहता है) प्रयाण किये हुए मनुष्य के विषय में यह जो संशयात्मक विवाद है, कोई कहता है "वह 'यह' नहीं है" और कोई कहता है कि "वह है"। इसे आपसे शिक्षा लेकर मैं जान लूँ; वरों में यह मेरा तृतीय वर है।

देवैरत्रापि विचिकित्सितं पुरा न हि सुविज्ञेयमणुरेष धर्मः।

अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व मा मोपरोत्सीरति मा सृजैनम् ॥

(यम कहते हैं) पूर्वकाल में देवगणों में भी इस विषय में संशयात्मक विवाद हुआ था; यह सरलता से जानने योग्य नहीं है, क्योंकि इसका धर्म बहुत सूक्ष्म है। हे नचिकेता! तुम अन्य कोई वर चुन लो; इस वर के लिए मुझसे आग्रह मत करो, अनुरोध मत करो, इसे छोड़ दो।

देवैरत्रापि विचिकित्सितं किल त्वं च मृत्यो यन्न सुज्ञेयमात्थ।

वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यो नान्यो वरस्तुल्य एतस्य कश्चित् ॥

निश्चय ही देवगणों में भी इस विषय में संशयात्मक विवाद हुआ था और आपने ही कहा कि यह तथ्य सरलता से जानने योग्य नहीं है; आपके सदृश वक्ता मुझे अन्य कोई नहीं मिलेगा और न इस वर के तुल्य अन्य कोई वर है।

शतायुषः पुत्रपौत्रान्वृणीष्व बहून्पशून्हस्तिहिरण्यमश्वान्।

भूमेर्महदायतनं वृणीष्व स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि ॥

(यम कहते हैं) शतायु पुत्रों तथा पौत्रों का वरण कर लो; बहुत से पशुओं (गायों आदि का) हाथियों, स्वर्णराशि तथा घोड़ों का वरण कर लो; अतिविस्तृत भूमिखण्ड का वरण कर लो तथा स्वयं जितने वर्ष इच्छा हो, जीवित रहो।

एतत्तुल्यं यदि मन्यसे वरं वृणीष्व वित्तं चिरजीविकां च।

महाभूमौ नचिकेतस्त्वमेधि कामानां त्वां कामभाजं करोमि ॥

यदि तुम इसे अपने वर के तुल्य मान लो, तो धन और चिरजीवन का वरण कर लो; हे नचिकेता! तुम विशाल भूमि का आधिपत्य ले लो; मैं तुम्हारी सभी इष्ट वस्तुओं की कामनाओं की पूर्ति करता हूँ।

ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान्कामांश्छन्दतः प्रार्थयस्व।

इमा रामाः सरथाः सतूर्या न हीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः।

आभिर्मत्प्रत्ताभिः परिचारयस्व नचिकेतो मरणं माऽनुप्राक्षीः ॥

जिन-जिन कामनाओं की पूर्ति मर्त्यलोक में दुर्लभ है, उन सभी कामनाओं को तुम सहर्ष माँग लो। देखो! अपने रथों एवं वाद्यो सहित ये मनोहारिणी रमणीयां हैं, मनुष्यों के लिए इस प्रकार की रमणीयां अलभ्य हैं, मैं इन्हें तुम्हें दूँगा। हे नचिकेता! (मेरे द्वारा प्रदत्त) इन्हें अपनी परिचारिकाओं के रूप में स्वीकार करके इनके साथ सुख सें रहो। किन्तु, मृत्यु के विषय में प्रश्न मत करो।

श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।

अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव वाहास्तव नृत्यगीते ॥

(नचिकेता कहता है) हे अन्तक! (अन्त करने वाले देव) मर्त्य मनुष्य के ये सब भोग पदार्थ कल तक ही रहने वाले हैं, ये सब इन्द्रियों की आतुरता तथा उनके तेज को जीर्णशीर्ण कर देते हैं, सम्पूर्ण जीवन भी स्वल्प मात्र ही है। आपके लिए ही हैं ये रथादि वाहन, आपके लिए ही हैं ये रमणीयों के नृत्य तथा गीत।

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा।

जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं वरस्तु मे वरणीयः स एव ॥

मनुष्य को धन से तृप्त नहीं किया जा सकता और अगर हमने आपके दर्शन कर लिये तो धन हमें मिल ही जाएगा तथा जब तक आपका हम पर प्रभुत्व रहेगा तब तक हम जीते भी रहेंगे। मेरे वरण करने योग्य वर तो वही है।

अजीर्यतामृतानामुपेत्य जीर्यन्मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन्।

अभिध्यायन्वर्णरतिप्रमोदानतिदीर्घे जीविते को रमेत ॥

कौन ऐसा मर्त्य मनुष्य होगा जो जरावस्था को प्राप्त होते हुए, इस दुःखमय भूतल पर वास करते हुए जब अजर-अमृत पुरुषों के सान्निध्य में आ जाता है और ज्ञानवान् हो जाता है तो रूप-रंग के सौन्दर्य, रति तथा आमोद-प्रमोदो को बहुत समीपता से निरीक्षण करते हुए, अतिदीर्घ जीवन में रमेगा?

यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत्।
योऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टो नान्यं तस्मान्नचिकेता वृणीते ॥

हे मृत्युदेव! यह, जिसके विषय में सब संशयात्मक विवाद करते हैं, तथा वह, जो महती प्रयाणगति (परलोकयात्रा) में है, उसे मुझे बताइये। यह वर जो उस गूढ रहस्य में प्रवेश करता है जिसे हम नहीं जानते हैं, उसके अतिरिक्त नचिकेता अन्य किसी वर का वरण नहीं करता।